==========

AVYAKT MURLI

19 / 05 / 77

==========

19-05-77 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

आत्म ज्ञान और परमात्म ज्ञान में अन्तर

सदा अन्तर्मुखी अर्थात् हर्षित मुखी, नॉलजफुल, पॉवरफुल, सदा बाप क साथ का अनुभव करनवालअनुभवी मूर्त बच्चो प्रति बाबा बोल-

स्वयं को सदा स्वदर्शन चक्रधारी अनुभव करतहो? सिर्फ समझतहो वा हर समय अनुभव होता ह? एक होता हसमझना, दूसरा होता हस्वरूप में लाना अर्थात् अनुभव करना। इस श्रष्ठ जीवन की वा श्रष्ठ नॉलज की श्रष्ठता हअनुभव करना। हर बात जब तक अनुभव में नहीं लाई हतो फिर आत्म ज्ञान और परमात्म ज्ञान में कोई अन्तर नहीं रहता। आत्माएं हैं, आत्म ज्ञान सुनानऔर समझानवाली न कि अनुभव करानवाली। परमात्म ज्ञान, हर बात का अनुभव करातहुए चढ़ती कला की ओर ल जाता ह। अपनआप सपूछो कि ज्ञान की हर बात अनुभव में लाई ह? समझनवालहो, सुननवालहो वा अनुभवी मूर्त हो? जीवन में अनक प्रकार क अनुभव आत्मा को नॉलजफुल और पॉवरफुल बनातहैं? किसी भी ज्ञान की प्वाइन्ट में पॉवरफुल नहीं हो तो अवश्य वह सब प्वाइन्ट क अनुभवी मूर्त नहीं बनहो। समझनसमझानवालवा वर्णन मूर्त बनहो

लेकिन मनन मूर्त नहीं बनते हो। जैसे औरों को सप्ताह कोर्स में विशेष सात प्वाइन्टस सुनाते हो, वह सात ही प्वाइन्टस सामने रखो और चेक करो कि सब प्वाइन्टस में अनुभवी मूर्त है और किसी प्वाइन्टस में समझने तक है, किस प्वाइन्टस में सुनने तक है। बाप-दादा रिजल्ट को देखते हुए जानते हैं कि अनुभवी मूर्त सर्व बातों में बहुत कम हैं। क्योंकि अनुभवी अर्थात् सदा किसी भी प्रकार के धोखे से, दु:ख, दुविधा से परे रहेंगे। अनुभव ही फाउन्डेशन (Foundation;नींव) है। अनुभव रूपी फाउन्डेशन मजबूत है तो किसी भी प्रकार के स्वयं के संस्कार, अन्य के संस्कार वा माया के छोटे बड़े विघ्नों से मजबूर हो जाते हैं, तो सिद्ध है कि अनुभव का फाउन्डेशन मजबूत नहीं है। अनुभवी मूर्त सदा स्वयं को सम्पन्न समझते हुए मजबूरी को मजबूरी न समझ, जीवन के लिए मजबूती का आधार समझेंगे। मजबूरी की स्थिति अप्राप्ति की निशानी है। अनुभवी मूर्त सर्व प्राप्ति स्वरूप है।

इसी प्रकार दु:ख की लहर वा धोखा खा लेते हैं - उसका भी कारण माया कहते हैं, लेकिन माया के अनेक रूपों के अनुभवी नहीं हैं। अनुभवी जो हैं वह माया को बेसमझ बच्चे की तरह समझते हैं। जैसे बेसमझ बच्चे कोई भी कर्म करते हैं तो समझा जाता है कि - हैं ही बेसमझ, बच्चे का काम ही ऐसा होता है। इसी प्रकार अनुभवी अर्थात् बुजुर्ग के आगे छोटे बच्चे खेल करते हैं तो माया के अनेक प्रकार की लीला को अनुभवी मूर्त, बच्चों का खेल अनुभव करेंगे। और दूसरे माया के छोटे से विघ्न को पहाड़ समान समझेंगे और सदा यही संकल्प करेंगे कि - माया बड़ी बलवान है,

माया को जीतना बड़ा मुश्किल है। कारण क्या? अनुभव की कमी। ऐसी आत्माएं बाप-दादा के शब्दों को लेंगी, भाव को नहीं समझेंगी। अनुभव का आधार नहीं होगा लेकिन शब्दों को आधार बनावेंगी कि - बाप-दादा भी कहते हैं, 'माया को जीतना मासी का घर नहीं है वा माया भी सर्व शक्तिमान है। अभी अजुन सम्पूर्ण नहीं बने हैं - अन्त में सम्पूर्ण बनेंगे।' ऐसे ऐसे शब्दों को अपना आधार बनाए चलने से आधार कमज़ोर होने के कारण बार-बार डगमग होते रहते हैं। इस लिए शब्दों को आधार नहीं बनाओ। लेकिन बाप के भाव को समझो। अनुभव को अपना आधार बनाओ। डगमग होने का कारण ही है अनुभव की कमी। कहलाते हैं 'मास्टर सर्वशक्तिवान', 'विजयी रत्न', 'स्वदर्शन चक्रधारी', 'शिव शक्ति पांडव सेना', 'सहज राजयोगी', 'महादानी वरदानी', 'विश्व कल्याणकारी' हैं, लेकिन जब स्वयं के कल्याण की कोई बात आती है, मायाजीत बनने की कोई बात आती है तो क्या करते हैं और क्या कहते हैं? जानते हो ना कि क्या करते हैं? बहुत मजेदार खेल करते हैं। नॉलेजफुल से बिल्कुल अनजान बन जाते हैं। जैसे माया बेसमझ बच्चा है वैसे माया के वश हो, नॉलेजफुल को भूल बेसमझ बच्चे के समान करते हैं। क्या करते हैं? 'ऐसे थोड़े ही समझा था, यह पहले मालूम होता तो त्याग नहीं करते, ब्राह्मण नहीं बनते। इतना सामना करना पड़ेगा। सहन करना पड़ेगा। हर बात में अपने को बदलना पड़ेगा। मिटना पड़ेगा, मरना पड़ेगा। यह तो मालूम ही नहीं था।' त्रिकालदर्शी नॉलेजफुल होते हुए यह बहाना, बेसमझ बचपन नहीं? लेकिन

यह सब क्यों होता ह? क्योंकि बाप क सदा साथ का अनुभव नहीं। सदा बाप क साथ क अनुभवी ऐसा कमज़ोरी का संकल्प भी नहीं कर सकत। बाप क साथ क नश का कल्प पहल वाला यादगार भी अभी तक गाया जा रहा ह। कौन सा? अक्षोणी सना क सामन होत बड़ बड़ महावीर सामन होत भी पांडवों को किसका नशा था? बाप क साथ का। अक्षोणी सना अर्थात् माया क अनक भिन्न-भिन्न स्वरूप भी बाप क साथ स अक्षोणी नहीं लकिन एक क्षण में भस्मी भूत हुए पड़ हैं। ऐसा नशा यादगार में भी गाया हुआ ह। महावीर को महावीर नहीं समझा, लकिन मर हुए मुर्दे समझ। यह किसका यादगार ह? बाप क साथ रहन वाल अनुभवी आत्माओं का। इस कारण कहा अनुभवी कभी धोखा नहीं खात। मुश्किल अनुभव नहीं करत। अन्जान अनुभव नहीं करत। कल्प पहल क यादगार को प्रक्टीकल अनुभव कर रह हो वा सिर्फ वर्णन करत हो? बाप-दादा जब बच्चों की ऐसी स्थिति दखत हैं, जो स्वयं का कल्याण नहीं कर सकत स्वयं को परिवर्तन नहीं कर सकत और अपनी कमज़ोरी को बहादुरी समझ कर वर्णन करत हैं तो बाप भी समझत हैं - समझन वाल हैं लकिन अनुभवी नहीं। इस कारण नॉलजफुल हैं, लकिन पॉवरफुल नहीं। सुनन सुनान वाल हैं, लकिन समझन वाल बाप समान बनन वाल नहीं। जो समान नहीं वो सामना भी नहीं कर सकत। कभी मुरझात कभी मुस्कारात रहत। इसलिए एकान्त वासी बनो, अन्तर्मुखी बनो। हर बात क अनुभव में स्वयं को सम्पन्न बनाओ। पहला पाठ बाप और बच्च का ह- किसका बच्चा हूँ? क्या प्राप्ति ह? इस पहल

पाठ क□ अनुभवीमूर्त बनो तो सहज ही मायाजीत हो जाएंग□। अल्प समय अनुभव में रहत□हो। ज्यादा समय सुनन□और समझन□में रहत□हो। ल□किन अनुभवी मूत अर्थात् सदा सर्व अनुभव में रहना। समझा? सागर क□ बच्च□ बन□हो ल□किन सागर अर्थात् सम्पन्न का अनुभव नहीं किया ह□? अच्छा।

सदा अन्तर्मुखी अर्थात् हर्षितमुखी, माया क□ हर वार को माखन स□बाल समझ पार करन□वाल□ऐस□सहज योगी, सदा बाप क□ साथ का अनुभव करन□वाल□सर्व अनुभवी मुर्तों को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्त□।

दीदी जी स□-

साक्षी होकर सर्व आत्माओं का अपना-अपना पार्ट द□ख□त□हुए कोई भी पार्ट को द□ख, 'ऐसा क्यों' की हलचल होती ह□? महारथी और घोड़□सवार दोनों का विशष अन्तर यही ह□। घोड़□सवार की निशानी क्या होगी? क्व□चन मार्क (Question Mark;प्रश्न चिन्ह) और महारथियों की निशानी होगी फुल स्टॉप (Full Stop;पूर्ण विराम) ज□□□कोई भी सज□ा होती ह□तो उसमें फर्स्ट नम्बर ह□यह सज□□ण्ड ह□उसकी निशानी होती ह□। फिर उनको मष्ठल मिलता ह□ जिसस□मालूम पड़ जाता ह□कि यह फर्स्ट, यह सज□□ण्ड ह□। तो अनादि ड्रामा में रूहानी सज□ा क□ सज□ानियों को कोई मष्ठल नहीं द□□ा ह□ल□किन ऑटोमट्टीकली (AUTOMATICALLY;स्वत:) ड्रामानुसार उन्हों को स्थिति रूपी मष्ठल प्राप्त हो ही जाता ह□। कोई मष्ठल लगाता नहीं ह□- स्वत: ही लगा हुआ होता ह□। तो सुनाया कि महावीर का मष्ठल होगा - फुल स्टाप। स्टाप

भी नहीं फुल स्टाप। और सेकण्ड नम्बर अर्थात् घोड़ेसवार की निशानी - कब स्टाप, कब क्वेश्चन। विशेष निशानी 'क्वेश्चन' की होगी। इससे ही समझना चाहिए कि किस स्टेज वाली आत्मा है। यह निशानी ही मेहनत है। स्पष्ट दिखाई देता है न? दिन-प्रतिदिन हरेक आत्मा अपना स्वयं ही साक्षात्कार कराती रहती। न चाहते हुए भी हरेक की स्टेज प्रमाण स्थिति दिखाई देती जा रही है। सरकमटेंसस (Circumstance;परिस्थिति) ऐसे आयेंगे, समस्याएं ऐसी उन्हों के सामने आयेंगी जो न चाहते हुए भी स्वयं को छिपा नहीं सकेंगे। क्योंकि अब जैसे समय समीप आ रहा है तो समीप समय के कारण माला स्वयं ही अपना साक्षात्कार करायेगी। स्थिति अपना नम्बर आटोमेटीकली प्रसिद्ध करती जा रही है। ऐसे अनुभव होता है ना? किसको आगे बढ़ना है तो उसको चान्स ही ऐसा मिल जाता। किसको पीछे का नम्बर है तो ऑटोमेटिकली समस्या वा बातें ऐसी सामने आयेंगी जिस कारण स्वत: आगे बढ़ने की ठहरती कला हो जायेगी। कितना भी चाहें लेकिन आगे बढ़ नहीं सकेंगे। दीवार को पार करने की शक्ति नहीं होगी। और इसका भी मूल कारण कि शुरू से हर गुण, शक्ति का पाइन्ट का अनुभवी बनकर नहीं चले हैं। बहुत थोड़ी आत्माएं होंगी जिन्हों का फाउन्डेशन अनुभव है। लेकिन मेजारिटी का आधार संगठन को देखना वा सिर्फ सात्विक जीवन पर प्रभावित होना, एक सहारा समझ कर चलना वा किसके साथ से उल्लास उमंग से चल पड़ना, किसके कहने से चल पड़ना, नॉलेज अच्छी है उसके सहारे चल पड़े - ऐसे चलने वालों का अनुभव का

फाउन्डेशन मजबूत न होने कारण चलते चलते उलझते बहुत हैं। लेकिन नम्बर तो बनने ही हैं। कई ऐसे अब भी हैं जो योग सिखाते हैं लेकिन योग का अनुभव नहीं है। वर्णन करते हैं योग किसको कहा जाता है, योग से यह प्राप्ति होती है, लेकिन योगी जीवन किसको कहा जाता है, उसका अनुभव बहुत अल्पकाल का है। "ड्रामा" कहते लेकिन ड्रामा के रहस्य को जान ड्रामा के आधार पर जीवन में अनुभव करना वह बहुत कम। ऐसा दिखाई देता है ना? फिर भी बाप कहते हैं ऐसी आत्माओं को भी साथ देते हुए मंजिल तक तो ले जाना ही है ना? बाप अपना वायदा तो निभायेंगे ना। लेकिन संगमयुग की प्राप्ति का जो 'श्रेष्ठ भाग्य' है उससे खाली रह जाते हैं। सहयोग की लिफ्ट से चलते रहेंगे। लेकिन जो सारे कल्प में नहीं मिलना है और अब मिल रहा उससे वंचित रह जाते हैं। ऐसे को देख करके रहम भी आता है, तरस भी पड़ता है। सागर के बच्चे बन कर भी तालाब में नहाने के अधिकारी बन जाते हैं। अपनी छोटी-छोटी कमज़ोरी की बातों में समय बिताना यह तालाब में नहाना हुआ ना? अच्छा।

पार्टियों से-

सभी सदा साथ का अनुभव करते हो? क्योंकि मुख्य बात है बाप को अपना साथी बनाना। अगर सदा का साथी बनाएंगे तो माया स्वत: ही अपना साथ छोड़ देगी। क्योंकि जब देखेगी इन आत्माओं ने मुझे छोड़ और को साथी बना दिया तो किनारे हो जाएगी। सदा बाप के साथी बनो, सहयोगी भी किनारा नहीं। जब साथी साथ निभाने के लिए तैयार है फिर किनारा क्यों

करते फायदा भी है। फायदे वाली बात कभी छोड़ी जाती है क्या? साथी का साथ न होने कारण अकेले करते इसलिए मेहनत लगती। बाप का साथ अर्थात् हुआ ही पड़ा है। किनारा करते तो छोटी बात भी मुश्किल लगती। इसलिए अन्तर्मुखी हो इन अनुभवों के अन्दर जाओ फिर शक्तिशाली अनुभव करेंगे।

सदा अपने को खुशी में अनुभव करते हो? जैसे स्थूल खज़ाने के मालिक सदा खज़ाने के नशे में रहते, ऐसे खुशी के खज़ाने से भरपूर अपने को समझते हुए चलते हो? सदा खुशी का खजाना कायम रहता है वा कभी लूट जाता है? अगर खजाना कोई लूट लेता तो खुशी भी चली जाती। खुशी जाना अर्थात् खज़ाने का जाना। खज़ाना तो बाप ने दिया लेकिन उसे सम्भालने वाले नम्बरवार हैं। यह खजाना अपना है तो अपनी चीज़ की कितनी सम्भाल रखी जाती। छोटी-सी चीज़ को भी सम्भाला जाता, यह तो बड़े ते बड़ा खजाना है। अगर सम्भालना आता तो सदा सम्पन्न होंगे। तो सदा खुशी से रहते हो? ब्राह्मण जीवन है ही खुशी। अगर खुशी नहीं तो कुछ भी नहीं। सदैव अटेंशन रखो, रास्ता जान लो कि किस रास्ते से खजाना लूट जाता है। उस रास्ते को बन्द करो फिर सदा शक्तिशाली अनुभव करेंगे। खज़ाने को सम्भालना सीखो। सम्भालने का आधार है- 'अटेंशन।' तो सदा खुश रहने का अपने से वचन लो। दूसरे के आगे वचन लेने से टेम्परेरी (अस्थायी) टाईम रहता। लेकिन स्वयं अपने आप से वचन लो कि कुछ भी हो जाए लेकिन प्रतिज्ञा को कभी नहीं तोड़ेंगे। बाप मिला,

वर्सा मिला बाकी क्या रहा? इतनी श्रेष्ठ प्राप्ति वाला कितना नशे में रहेगा? सदा मायाजीत अर्थात् सदा हर्षित। स्वयं और दूसरों की सेवा का बैलेन्स हो तो मेहनत कम और सफलता ज्यादा होगी।

==

QUIZ QUESTIONS

==

प्रश्न 1 :- आत्म ज्ञान और परमात्म ज्ञान में क्या अन्तर है?

प्रश्न 2 :- अनुभवी मूर्त आत्मा की मुख्य निशानियाँ क्या है?

प्रश्न 3 :- अनुभव का फाउन्डेशन मजबूत न होने के कारण आत्माएं किसी प्रकार संगमयुग के श्रेष्ठ भाग्य से वंचित रह जाती है?

प्रश्न 4 :- रूहानी सेना के सेनानियों को किस प्रकार स्थिति रूपी महल प्राप्त हो जाता है?

प्रश्न 5 :- सदा अपने को खुशी में अनुभव करने के लिए बाबा ने क्या शिक्षा दी है?

FILL IN THE BLANKS:-

{ माया, समझना, सदा, स्वरूप, अनुभव, स्वत:, साथी, किनारा, शब्दों, कमज़ोर,भस्मी भूत, छोड़, तख्तार, डगमग }

1 एक होता ह_____, दूसरा होता हस्वरूप में लाना अर्थात् _____ करना।

2 अक्षोणी सत्ता अर्थात् _____ क अनक भिन्न-भिन्न _____ भी बाप क साथ सअक्षोणी नहीं लकिन एक क्षण में ____ हुए पड़हैं।

3 ऐसऐस_____ को अपना आधार बनाए चलनस आधार _____ होन कारण बार-बार _____होतरहतहैं।

4 जब ____ साथ निभान क लिए _____ हफिर _____ क्यों करत

5 अगर _____ का साथी बनाएंगतो माया _____ ही अपना साथ _____ दगी।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित कर-

1 :- इस श्रष्ठ जीवन की वा श्रष्ठ नॉलज की श्रष्ठता हअनुभव कराना ।

2 :- ऐसी आत्माएं बाप-दादा क शब्दों को लेंगी, भाव को नहीं समझेंगी।

3 :- विघ्न होनका कारण ही हअनुभव की कमी।

4 :- जो सहज राजयोगी नहीं वो सामना भी नहीं कर सकत।

5 :- बाप का साथ अर्थात् हुआ ही पड़ा ह।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- आत्म ज्ञान और परमात्म ज्ञान में क्या अन्तर ह?

उत्तर 1 :-आत्म ज्ञान और परमात्म ज्ञान में मुख्य अन्तर ह:-

❶ आत्माएं हैं, आत्म ज्ञान सुनानऔर समझानवाली न कि अनुभव करानवाली।

❷ परमात्म ज्ञान, हर बात का अनुभव करातहुए चढ़ती कला की ओर लजाता ह।

❸ जीवन में अनक प्रकार क अनुभव आत्मा को नॉलजफुल और पॉवरफुल बनातहैं? किसी भी ज्ञान की प्वाइन्ट में पॉवरफुल नहीं हो तो अवश्य वह सब प्वाइन्ट क अनुभवी मूर्त नहीं बनहो।

प्रश्न 2 :- अनुभवी मूर्त आत्मा की मुख्य निशानियाँ क्या ह?

उत्तर 2 :-अनुभवी मूर्त आत्मा की मुख्य निशानियाँ हैं:-

❶ अनुभवी मूर्त सदा स्वयं को सम्पन्न समझते हुए मजबूरी को मजबूरी न समझ, जीवन के लिए मजबूती का आधार समझेंगे। मजबूरी की स्थिति अप्राप्ति की निशानी है। अनुभवी मूर्त सर्व प्राप्ति स्वरूप है।

❷ अनुभवी जो हैं वह माया को बेसमझ बच्चे की तरह समझते हैं। जैसे बेसमझ बच्चे कोई भी कर्म करते हैं तो समझा जाता है कि - हैं ही बेसमझ, बच्चे का काम ही ऐसा होता है। इसी प्रकार अनुभवी अर्थात् बुजुर्ग के आगे छोटे बच्चे खेल करते हैं तो माया के अनेक प्रकार की लीला को अनुभवी मूर्त, बच्चों का खेल अनुभव करेंगे।

प्रश्न 3 :- अनुभव का फाउन्डेशन मजबूत न होने के कारण आत्माएं किसी प्रकार संगमयुग के श्रेष्ठ भाग्य से वंचित रह जाती है?

उत्तर 3 :-अनुभव का फाउन्डेशन मजबूत न होने के कारण हैं:-

❶ ऐसी आत्माएं बाप-दादा के शब्दों को लेंगी, भाव को नहीं समझेंगी। अनुभव का आधार नहीं होगा लेकिन शब्दों को आधार बनावेंगी

❷ मैजारिटी का आधार संगठन को देखना वा सिर्फ सात्विक जीवन पर प्रभावित होना, एक सहारा समझ कर चलना वा किसके साथ से उल्लास उमंग से चल पड़ना, किसके कहने से चल पड़ना, नॉलेज अच्छी है।

उसके सहारे चल पड़े- ऐसे चलने वालों का अनुभव का फाउन्डेशन मजबूत न होने कारण चलते-चलते उलझते बहुत हैं। लेकिन नम्बर तो बनने ही हैं।

❸ कई ऐसे अब भी हैं जो योग सिखाते हैं लेकिन योग का अनुभव नहीं है। वर्णन करते हैं योग किसको कहा जाता है, योग से यह प्राप्ति होती है, लेकिन योगी जीवन किसको कहा जाता है, उसका अनुभव बहुत अल्पकाल का है।

❹ "ड्रामा" कहते, लेकिन ड्रामा के रहस्य को जान ड्रामा के आधार पर जीवन में अनुभव करना वह बहुत कम। ऐसा दिखाई देता है ना?

❺ फिर भी बाप कहते हैं ऐसी आत्माओं को भी साथ देते हुए मंजिल तक तो ले जाना ही है ना? बाप अपना वायदा तो निभायेंगे ना। लेकिन संगमयुग की प्राप्ति का जो 'श्रेष्ठ भाग्य' है उससे खाली रह जाते हैं। सहयोग की लिफ्ट से चलते रहेंगे। लेकिन जो सारे कल्प में नहीं मिलना है और अब मिल रहा उससे वंचित रह जाते हैं।

❻ ऐसे को देख करके रहम भी आता है, तरस भी पड़ता है। सागर के बच्चे बन कर भी तालाब में नहाने के अधिकारी बन जाते हैं। अपनी छोटी-छोटी कमज़ोरी की बातों में समय बिताना यह तालाब में नहाना हुआ ना?

प्रश्न 4 :- रूहानी सेना के सेनानियों को किस प्रकार स्थिति रूपी मैडल प्राप्त हो जाता है?

उत्तर 4 :-रूहानी सेना के सेनानियों को स्थिति रूपी मैडल इस प्रकार प्राप्त होता :-

❶ जैसे कोई भी सेना होती है तो उसमें फर्स्ट नम्बर है, यह सैकण्ड है, उसकी निशानी होती है। फिर उनको मैडल मिलता है जिससे मालूम पड़ जाता है कि यह फर्स्ट, यह सैकण्ड है।

❷ तो अनादि ड्रामा में रूहानी सेना के सेनानियों को कोई मैडल नहीं देता है लेकिन ऑटोमेटीकली (AUTOMATICALLY;स्वत:) ड्रामानुसार उन्हों को स्थिति रूपी मैडल प्राप्त हो ही जाता है। कोई मैडल लगाता नहीं है-स्वत: ही लगा हुआ होता है।

❸ तो सुनाया कि महावीर का मैडल होगा - फुल स्टाप। स्टाप भी नहीं फुल स्टाप। और सैकण्ड नम्बर अर्थात् घोड़ेसवार की निशानी - कब स्टाप, कब क्वेश्चन। विशेष निशानी 'क्वेश्चन' की होगी। इससे ही समझना चाहिए कि किस स्टेज वाली आत्मा है। यह निशानी ही मैडल है। स्पष्ट दिखाई देता है ना?

❹ दिन-प्रतिदिन हरेक आत्मा अपना स्वयं ही साक्षात्कार कराती रहती। न चाहते हुए भी हरेक की स्टेज प्रमाण स्थिति दिखाई देती जा रही है। समीप समय के कारण माला स्वयं ही अपना साक्षात्कार करायेगी।

स्थिति अपना नम्बर आटोमैटीकली प्रसिद्ध करती जा रही है। ऐसा अनुभव होता है ना?

❺ किसको आगे बढ़ना है तो उसको चान्स ही ऐसा मिल जाता। किसको पीछे का नम्बर है तो ऑटोमैटिकली समस्या वा बातें ऐसी सामने आयेंगी जिस कारण स्वत: आगे बढ़ने की ठहरती कला हो जायेगी। कितना भी चाहें लेकिन आगे बढ़ नहीं सकेंगे।

प्रश्न 5 :- सदा अपने को खुशी में अनुभव करने के लिए बाबा ने क्या शिक्षा दी है?

उत्तर 5 :-सदा अपने को खुशी में अनुभव करने के लिए शिक्षा दी है कि:-

❶ जो स्थूल खज़ाने के मालिक सदा खज़ाने के नशे में रहते, ऐसे खुशी के खज़ाने से भरपूर अपने को समझते हुए चलते हो? सदा खुशी का खजाना कायम रहता है वा कभी लूट जाता है?

❷ अगर खजाना कोई लूट लेता तो खुशी भी चली जाती। खुशी जाना अर्थात् खज़ाने का जाना। खज़ाना तो बाप ने दिया लेकिन उसे सम्भालने वाले नम्बरवार हैं। यह खजाना अपना है तो अपनी चीज़ की कितनी सम्भाल रखी जाती। छोटी-सी चीज़ को भी सम्भाला जाता, यह तो बड़े ते बड़ा खजाना है। अगर सम्भालना आता तो सदा सम्पन्न होंगे। तो सदा खुशी से रहते हो?

❸ ब्राह्मण जीवन ह□ही खुशी। अगर खुशी नहीं तो कुछ भी नहीं। सदा अटेंशन रखो, रास्ता जान लो कि किस रास्त□स□खजाना लूट जाता ह। उस रास्त□को बन्द करो फिर सदा शक्तिशाली अनुभव करेंगा।

❹ खज़ान□को सम्भालना सीखो। सम्भालन□का आधार ह□- 'अटेंशन।' तो सदा खुश रहन□का अपन□स□वचन लो। दूसर□क□ आग□वचन लेना□स□टेम्परेरी (अस्थायी) टाईम रहता। लेकिन स्वयं अपन□आप स□वचन लो कि कुछ भी हो जाए लेकिन प्रतिज्ञा को कभी नहीं तोड़ेंगा। बाप मिला, वर्सा मिला बाकी क्या रहा? इतनी श्रेष्ठ प्राप्ति वाला कितना नश□में रहेगा?

❺ सदा मायाजीत अर्थात् सदा हर्षित। स्वयं और दूसरों की सेवा का बिजनेस हो तो मेहनत कम और सफलता ज्यादा होगी।

FILL IN THE BLANKS:-

{ माया, समझना, सदा, स्वरूप, अनुभव, स्वत:, साथी, किनारा, शब्दों, कमज़ोर, भस्मी भूत, छोड़, तेज़ार, डगमग }

1 एक होता ह□_____, दूसरा होता ह□स्वरूप में लाना अर्थात् _____ करना।

समझना / अनुभव

2 अक्षोणी सञ्ज्ञा अर्थात् _____ क□ अनक्र भिन्न-भिन्न _____ भी बाप क□ साथ स□अक्षोणी नहीं लक्रिन एक क्षण में ____हुए पड़□हैं।

माया / स्वरूप / भस्मी भूत

3 ऐस□ऐस□_____ को अपना आधार बनाए चलन□स□आधार _____ होन□ कारण बार-बार _____ होत□रहत□हैं।

शब्दों / कमज़ोर / डगमग

4 जब ____ साथ निभान□क□ लिए _____ ह□फिर _____ क्यों करत□?

साथी / तञ्ज्ञार / किनारा

5 अगर _____ का साथी बनाएंग□तो माया _____ ही अपना साथ _____ दञ्ज्ञी।

सदा / स्वत: / छोड़

सही गलत वाक्यो को चिन्हित कर□-

1 :- इस श्रेष्ठ जीवन की वा श्रेष्ठ नॉलेज की श्रेष्ठता ह अनुभव कराना। 【✖】

इस श्रेष्ठ जीवन की वा श्रेष्ठ नॉलेज की श्रेष्ठता ह अनुभव करना।

2 :- ऐसी आत्माएं बाप-दादा क शब्दों को लेंगी, भाव को नहीं समझेंगी। 【✔】

3 :- विघ्न होन का कारण ही ह अनुभव की कमी। 【✖】

डगमग होन का कारण ही ह अनुभव की कमी।

4 :- जो सहज राजयोगी नहीं वो सामना भी नहीं कर सकत 【✖】

जो समान नहीं वो सामना भी नहीं कर सकत

5 :- बाप का साथ अर्थात् हुआ ही पड़ा ह। 【✔】